प्राणि विज्ञान विभाग में **दिनांक 14 फरवरी, माघ शुक्ल पक्ष बसन्त पंचमी को माँ सरस्वती के पूजन समारोह का आयोजन किया** गया **तथा इस अवसर पर विभाग द्वारा वार्षिक पत्रिका ''वसुन्धरा'' का** विमोचन माननीय कुलपति महोदया द्वारा **किया** गया। पत्रिका के प्रकाशन से विभाग के छात्र–छात्राओं को सकारात्मक सोच, शैक्षणिक उन्नयन एवं उन्नत विचारों को अभिव्यक्त करने तथा विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायी ज्ञानवर्द्धक एवं रचनाशीलता में सहायक सिद्ध होगी

हम सबको जीवन का आलम्ब देने वाली धरती माँ **''वसुन्धरा''** शस्य श्यामल है। यह भी सबकी पोषक, जिजीविषा के माध्यम से आत्मचेतना से जोड़ने वाली है। कितने सुन्दर फूल, फल, वृक्ष, वन, नदी, पर्वत, झरने, पशुपक्षी, कीट पतंग, सागर तथा जैव विविधता से भरी हुई है। हमारी ''वसुन्धरा'' जीवन का हर स्रोत इससे ही हर जीव इससे है।

मातृशक्ति के आशीर्वाद के बिना कोई पुष्पित एवं पल्लवित नहीं हो सकता यह सत्य है। क्योंकि जीवन के प्रवाह को बनाए रखने, बुद्धि, विवके एवं मन की दिशा को तय करने वाली माँ शारदा ही हैं। हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा के अनुसार गुरुकुलों, आश्रमों, विद्यालयों तथा शिक्षा के अनेकानेक मन्दिरों में सरस्वती पूजा होती आई है। आज तक मानव सभ्यता के अभ्युदय के बाद जीवन का अथाह प्रवाह माँ शारदा के चरण कमलों के आशीर्वाद से ही चलता आया है। हमारे यहाँ विद्या की पूर्णता की बात की गई है। जिसमें संस्कारों, शिक्षा, दीक्षा के माध्यम से शिक्षा एवं दीक्षा दोनों को धारण करने, अपनाने एवं ब्रह्मचर्य गृहस्थ जीवन में प्रवेश से लेकर धर्मशः वानप्रस्थ आश्रम के जीवन व्यतीत कर अपने कर्तव्य कर्मों को पूरा कर संन्यास की दीक्षा का विधान है अर्थात् हमारी शिक्षा, शक्ति, भक्ति एवं मुक्ति प्रदान करती है। यही हमारी सांस्कृतिक धरोहर है एवं सरोकार है। जीवन का जीवन्त ''वसुधैव कुटुम्बकम'' से ओतप्रोत हमारी सनातन संस्कृति सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय के मूल सिद्धांत पर आधारित है। हमने प्राचीन काल से दग्ध, संतृप्त एवं दुःखी मानव को करुणा, प्रेम और अहिंसा जैसे मानवीय लेपों से उनके दुःखों एवं दर्दों का उपचार किया है। भारतीय संस्कृति मूल में हैं। सब अपने हैं। अपने से पराया कोई नहीं। यही आधारभूत सत्य हमें विश्व मानव को जोड़ने एवं शत्रुता त्यागकर, मित्रवत रहने की प्रेरणा देता है। यही हमारी पाश्चात्य संस्कृति से भिन्नता है। भविष्य में सदियों तक मानव इतिहास इसी सत्य पर चलता रहेगा क्योंकि शांतिपूर्ण, करुणा एवं भक्तिमय निर्वेद, रागद्वेष से मुक्त जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है। जीओ और जीने दो इसका उत्कर्ष है। इसमें संघर्ष की गुंजाइश नही, परोपकार एवं सेवा का भाव है।

प्राणि विज्ञान विभाग
सरस्वती पूजन समारोह
14 फरवरी, 2024, विक्रम संवत 2080
स्थलः शोध भवन

क्षण–प्रतिक्षण कार्यक्रम

पूर्वान्ह	10.00	माननीया मुख्य अतिथि का गेट पर पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत एवं कार्यक्रम में आगमन
पूर्वान्ह	10.05	माननीया कुलपति द्वारा माता सरस्वती का पूजन, दीप प्रज्वलन कुलगीत, माँ सरस्वती की वंदना
पूर्वान्ह	10.10	माननीया कुलपति का स्वागत, अंगवस्त्र, नारियल, बुकें एवं स्मृति चिन्ह भेंट
पूर्वान्ह	10.15	विभागाध्यक्ष द्वारा अतिथियों का स्वागत हेतु उद्‌बोधन पत्रिका का विमोचन
पूर्वान्ह	10.20	विभाग के छात्र–छात्राओं द्वारा कविता पाठ, भाषण, अभिनय
पूर्वान्ह	10.30	विशिष्ट अतिथि का भाषण (1)
पूर्वान्ह	10.35	विशिष्ट अतिथि का भाषण (2)

पूर्वान्ह	10.40	कुलपति का उद्‌बोधन
पूर्वान्ह	10.50	प्रो० अजय सिंह पूर्व संकाय एवं विभागाध्यक्ष द्वारा धन्यवाद भाषण
पूर्वान्ह	11.00	राष्ट्रगान के बाद कार्यक्रम का समापन
पूर्वान्ह	11.00	प्रसाद वितरण एवं जलपान